SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.54

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन

पिंकी यादव[1], डॉ कमलेश यादव[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, महाराणा प्रताप पी0जी0 कॉलेज, हरदोई
Email id-25293Pinkee@gmail.com

शोध सार-

प्रस्तुत शोध डी.एल.एड.प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन पर केंद्रित है। शोध में न्यादर्श के रूप में लखनऊ महानगर में स्थित महाविद्यालय से 100 प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं को चयनित किया गया है। जिसमें ग्रामीण शहरी,प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है और महिला प्रशिक्षु और पुरुष प्रशिक्षु,एवम् कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षु को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस अध्ययन मे वैज्ञानिक अभिवृति को मापने के लिए डॉ सुखवंत बाजवा और मोनिका महाजन द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। माध्यमान, मानक विचलन,क्रांतिक अनुपात सांख्यिकी तकनीकी का उपयोग दत्त विश्लेषण के लिए किया गया है।प्रस्तुत शोध के परिणाम डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। महिला एवं पुरुष डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति समान है। शहरी एवं ग्रामीण डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। शहरी एवं ग्रामीण डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति समान नहीं है।संकाय के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।अर्थात संकाय के आधार पर प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति समान है।

मुख्य शब्द –डी.एल.एड. प्रशिक्षु, वैज्ञानिक अभिवृति।

प्रस्तावना-

विज्ञान की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मानव जाति का सबसे बड़ा आविष्कार भी है। आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान ब्रह्मांड के बारे में ज्ञान को एकत्रित करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। विज्ञान अब जीवन के प्रारंभिक स्तर से ही आवश्यक हो गई है इसीलिए विज्ञान विषय अब स्कूली शिक्षा से ही अनिवार्य विषय है। विज्ञान न केवल पाठ्यक्रम में एक विषय के रूप में शामिल है बल्कि जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण विषय भी है। विज्ञान ने वर्तमान समाज के सांस्कृतिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव डाला है जो की विज्ञान की ही देन है आज के समय मनुष्य की सोच,भावनाएं,विचार और कार्य रूप विज्ञान के प्रभाव से निर्देशित होते हैं। **गंगवार सुमित एवं पाल शीरीष सिंह** (2020) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन करने पर लिंग के आधार पर माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति की तुलना करने पर पाया गया कि बालकों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति बालिकाओं के वैज्ञानिक अभिवृत्ति से अधिक है तथा आवासीय

पृष्ठभूमि के आधार पर माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति की तुलना करने पर पाया गया की कक्षा 9 के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है की पुष्टि होती है। इसीलिए जीवन के प्रारंभिक चरण में ही अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण रुचि और क्षमता का अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

विज्ञान बच्चों की उस स्वाभाविक जिज्ञासा को संतुष्ट करने में भी सहायता करता है जिसके साथ बच्चे जन्म लेते हैं वैज्ञानिक अभिवृति विज्ञान के क्षेत्र में किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के संबंध में अपनाई गई राय,विचार,स्थित है वैज्ञानिक अभिवृत्ति की कुछ विशेषताएं जैसे खुली मानसिकता, जिज्ञासा,सत्यापित तथ्यों के आधार पर निर्णय निष्कर्ष का परीक्षण और सत्यापन करने के लिए तैयार,कारण और प्रभाव का संबंध,अंधविश्वास और झूठी मान्यताओं से मुक्त,खुली विचारधारा और संतुलित मन का योग है। जब किसी घटना, स्थिति या किसी समस्या का समाधान वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर विचार करते हुए किया जाता है तथा उसके लिए वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करके निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं तो उसे वैज्ञानिक का अभिवृति कहते हैं ।**कुमार सैम (1992)** ने तमिलनाडु के कुड्डालोर जिले में यादृच्छिक रूप से न्यादर्श चुना और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सामान्य विज्ञान के शिक्षण और वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास का सामान्य विज्ञान में उपलब्धि के संबंध में अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष पाया कि शहरी और ग्रामीण छात्रों, लड़कों और लड़कियों के वैज्ञानिक अभिवृत्ति परीक्षण अंकों के औसत में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

NCERT द्वारा प्रकाशित शिक्षक शिक्षा रूपरेखा (जैसे D.El.Ed पाठ्यक्रम ढाँचा) में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को राष्ट्रीय शिक्षा के मूल उद्देश्यों में शामिल किया गया है। इसमें शिक्षक-प्रशिक्षण में गतिविधि-आधारित शिक्षण, अन्वेषणात्मक अधिगम तथा बाल-केंद्रित पद्धतियों पर बल दिया गया है।प्रमुख बिंदु-राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश ,कक्षा शिक्षण में प्रयोग, परियोजना कार्य और अवलोकन का महत्व,शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक एवं शोधकर्ता के रूप में। वैज्ञानिक अभिवृत्ति तार्किक होती है ।**पं. राजेंद्रन एवं डॉ.आर.आनंदरासु (2021)**बी. एड. छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन किया,अध्ययन करने पर पाया कि बीएड प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में लिंग के आधार पर महत्वपूर्ण अंतर है महिला बी. एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि का स्तर पुरुष बी. एड.प्रशिक्षुओ की तुलना में काफी अधिक है तथा उनके विषय वर्ग के अनुसार भी महत्वपूर्ण अंतर पाया गया भाषा और विज्ञान विषय के प्रशिक्षुओ की कला विषय के प्रशिक्षुओ की तुलना में वैज्ञानिक अभिवृत्ति बेहतर है।

सी. मीनाक्षी एवं डॉ. एम. वसीमालाई राजा(2016) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन, प्रस्तुत शोध में अध्ययन उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के वैज्ञानिक अभिवृत्ति का पता लगाना है। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि अपनाई है। विरुधुनगर जिले में सरल यादृच्छिक विधि का उपयोग करके 8वीं, 9वीं और 10वीं कक्षा के 300 छात्रों का न्यादर्श चुना गया है। अध्ययन के परिणामों से पता चला है कि लिंग और विद्यालयों के प्रकार के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति के औसत अंकों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उपयोग व्यक्ति अपने जीवन काल के अनेक पक्षों में करता है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति से अभिप्राय है किसी घटना वस्तु या विचार को वैज्ञानिक तरीके से समझने जानने और रखने का एक दृष्टिकोण यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो इस सबूत और तार्किक सोच पर आधारित है। विज्ञान की प्रगति के कारण वैज्ञानिक सोच के लिए माध्यमिक शिक्षा आयोग ने सिफारिश की है कि प्रत्येक स्कूली छात्र को सामान्य विज्ञान को एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ना चाहिए ताकि वह अपनी सामान्य शिक्षा के एक भाग के रूप में वैज्ञानिक अभिवृत्ति की एक बुनियादी मात्रा प्राप्त कर सके।

अध्ययन की आवश्यकता –

एक देश की वैज्ञानिक खोजों का लाभ पूरी दुनिया के लोग उठा रहे हैं। विज्ञान न तो क्षेत्र, जाति, पंथ या रंग से संबंधित और ना ही क्षेत्रीय बाधाओं को मानता है। विज्ञान में निहित एक ऐसा स्वरूप है जो निश्चित रूप से प्रशिक्षु के मन पर प्रभाव डालेगा और उनके व्यापक सोच को विकसित करने में मदद करेगा। वैज्ञानिक अभिवृत्ति वैज्ञानिक एक निश्चित तरीके से कार्य करने की प्रवृत्ति या भावनाओं ,विचारों का प्रदर्शन है वैज्ञानिक दृष्टिकोण विज्ञान

शिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है और यह हमें तर्कसंगत रूप से सोचने में सक्षम बनाता है। ग्रीनलैंड के अनुसार" वैज्ञानिक दृष्टिकोण दुनिया की समस्याओं को हल करने का एक तरीका नहीं बल्कि दुनिया को देखने का एक तरीका है। चिंतन और तर्क समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक अभिवृत्ति महत्वपूर्ण है।" स्वतंत्रता के बाद लगभग सभी नीतियों, आयोगों, समितियां ने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास को महत्वपूर्ण बताया है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रशिक्षुयों के लिए तो और अधिक आवश्यक है क्योंकि यह प्रशिक्षु ही प्राथमिक विद्यालयों के भावी शिक्षक होते हैं। यह शोध पत्र महाविद्यालय के प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर केंद्रित है। राष्ट्र की प्रगति कल्याण और समृद्धि देश की शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा पर शोध कार्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में किए गए शोधों पर निर्भर करता है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति अंधविश्वासों के उन्मूलन, वस्तुनिष्ठ, जिज्ञासा, आलोचनात्मक चिंतन और निर्णय लेने की क्षमता आदि के विकास के माध्यम से राष्ट्रीय विकास में योगदान दे सकता है। प्रशिक्षुओं में विकसित वैज्ञानिक सोच विचार से लाभ निश्चित ही विद्यार्थियों को प्राप्त होगा क्योंकि यह प्रशिक्षु ही देश के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य करेंगे। वैज्ञानिक अभिवृत्ति को विकसित करने के लिए विज्ञान के ज्ञान और राष्ट्रीय विकास और सामाजिक परिवर्तन में बहुत बेहतर योगदान देती है इसीलिए विज्ञान द्वारा विज्ञान पाठों के माध्यम से वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास पर जोर दिया गया है। यह डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं के लिए अति आवश्यक हो जाता है क्योंकि प्राथमिक स्तर की शिक्षा देने का कार्य यह प्रशिक्षु ही करेंगे इसीलिए प्रशिक्षुओं में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का होना अत्यंत आवश्यक है।

शोध शीर्षक- डी.एल.एड. प्रशिक्षुयों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन.

चरों का परिभाषिकरण-

डी.एल.एड. प्रशिक्षु- डी.एल.एड. प्रशिक्षु से तात्पर्य यह है कि जो विद्यार्थी डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन (Diploma in Elementary Education) पाठ्यक्रम में अध्ययनरत है तथा प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा है।

वैज्ञानिक अभिवृत्ति वैज्ञानिक अभिवृत्ति :- प्रस्तुत अध्ययन में वैज्ञानिक अभिवृत्ति से अभिप्राय प्रशिक्षु के उस दृष्टिकोण से है जो किसी व्यक्ति, वस्तु, संस्था अथवा स्थिति, विचार के प्रति वैज्ञानिक सोच मे सकारात्मक या नकारात्मक भावना को प्रदर्शित करने से है। एवं सुखवंत बाजवा एवं मोनिका महाजन (2021) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी में दिये गए पाँच आयामों वाले कथनों पर (तर्कसंगतता, जिज्ञासा, खुली मानसिकता, वैज्ञानिक पद्धति में विश्वास और अंधविश्वास) में प्राप्त प्रतिक्रिया से है एवं सुखवंत बाजवा एवं मोनिका महाजन (2021) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी में दिये गए पाँच आयामों वाले कथनों पर (तर्कसंगतता, जिज्ञासा, खुली मानसिकता, वैज्ञानिक पद्धति में विश्वास और अंधविश्वास) में प्राप्त प्रतिक्रिया से है।

अध्ययन के उद्देश्य-

1 डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके विषय वर्ग (कला एवं विज्ञान वर्ग) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1.डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है।

2. डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है।

3 डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके विषय वर्ग(कला एवं विज्ञान वर्ग)के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है।

शोध का परिसीमन-

इस शोध में लखनऊ महानगर में संचालित महाविद्यालयों के डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं को ही सम्मिलित किया गया है।

शोध का न्यादर्श- प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन सरल यादृच्छिक विधि से किया गया है ।प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार 100 प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है। न्यादर्श के रूप में लखनऊ महानगर के महाविद्यालयों से 100 प्रशिक्षुओं को लिया गया है। जिसमें 50महिला ,50 पुरुष प्रशिक्षुओं का चयन किया गया और 58 शहरी ,42 ग्रामीण है तथा 46कला संकाय ,54 विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है।

विधि- प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण- प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संग्रहण के लिए वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी डॉ सुखवंत बाजवा एवं मोनिका महाजन द्वारा निर्मित(2021) का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी तकनीकी -प्रस्तुत शोध कार्य में दत्त विश्लेषण के लिए माध्यमान, मानक विचलन, और क्रान्तिक अनुपात सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण-

उद्देश्य- डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रथम परिकल्पना का परीक्षण-

H1 डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है।

H2 डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके लिंग के आधार पर सार्थक अंतर है।

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके लिंग के आधार पर तुलना-

तालिका संख्या-1

क्रम संख्या	चर	N	M	SD	SED	C.R.	सार्थकता स्तर
1.	महिला डी.एल.एड. प्रशिक्षु	50	162	11.38	1.081	0.685	0.05 स्तर पर सार्थक है।
2.	पुरुष डी.एल.एड. प्रशिक्षु	50	156	10.30			

उपर्युक्त तालिका सारणी 1 से स्पष्ट है कि पुरुष डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का मध्यमान 156 तथा मानक विचलन 10.30 है। महिला डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का माध्यमान 162 तथा मानक विचलन 11.38 है। इन आंकड़ों के आधार पर मानक विचलन की मानक त्रुटि 1.081 तथा सी0आर0 0.685 है परिगणित मान 0.05 स्तर पर सारणी मान से कम है। अत: निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि मध्यमानों में अंतर सार्थक नहीं है शून्य परिकल्पना डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं में उनके लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है स्वीकार होती है। डी.एल.एड. महिला प्रशिक्षुओं एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात पुरुष डी.एल.एड. तथा महिला डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति समान है।

द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण-

उद्देश्य- डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

H1 डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है।

H2 डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर सार्थक अंतर है।

डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान (शहरी एवं ग्रामीण)के आधार पर तुलना-

तालिका संख्या-2

क्रम संख्या	चर	N	M	SD	SED	C.R.	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण डी.एल.एड. प्रशिक्षु	42	163	12.72	2.429	2.470	0.05 स्तर पर सार्थक है।
2.	शहरी डी.एल.एड. प्रशिक्षु	58	157	10.89			

उपर्युक्त तालिका सारणी 2 से स्पष्ट है कि ग्रामीण डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का मध्यमान 163 तथा मानक विचलन 12.72 है। शहरी डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का माध्यमान 157 और मानक विचलन 10. 89 है इन आंकड़ों के आधार पर मानक विचलन की मानक त्रुटि 2.429 तथा सी0आर0 2.470 है। परिगणित मान 0.05 स्तर पर सारणी मान से अधिक है अत: निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि मध्यमान में अंतर सार्थक है शून्य परिकल्पना डी.एल.एड. शहरी प्रशिक्षुओं एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है निरस्त होती है। डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया है शोध परिकल्पना स्वीकार होती है। अर्थात उनके निवास -स्थान के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति सामान नहीं है।

तृतीय परिकल्पना परीक्षण -

उद्देश्य- डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके विषय वर्ग (कला विज्ञान वर्ग) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

H1 - डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके विषय वर्ग (कला विज्ञान वर्ग) आधार पर सार्थक अंतर नहीं है।

H2 डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके विषय वर्ग (कला विज्ञान वर्ग) आधार पर सार्थक अंतर है।

डी.एल.एड.प्रशिक्षुओ की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके विषय वर्ग (कला /विज्ञान वर्ग)आधार पर तुलना-

तालिका संख्या-3

क्रम संख्या	चर	N	M	SD	SD SED	C.R.	सार्थकता स्तर
1.	विज्ञान वर्ग डी.एल.एड. प्रशिक्षु	54	161	11.58	232	1.97	0.05 स्तर पर सार्थक है।
2.	कला वर्ग डी.एल.एड. प्रशिक्षु	46	156	11.56			

उपर्युक्त तालिका सारणी 3 से स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का माध्यमान 161 तथा मानक विचलन 11.58 है। कला वर्ग के डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का माध्यमान 156 तथा मानक विचलन 11.56 है। इन आंकड़ों के आधार पर मानक विचलन की मानक त्रुटि 2.32 तथा सी0आर0 1.97 है। परिगणित मान 0.05 पर सारणी मान से कम है अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि मध्यमान में सार्थक अंतर है अतः शून्य परिकल्पना डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके विषय वर्ग (कला/ विज्ञान वर्ग) के आधार

पर सार्थक अंतर नहीं होगा स्वीकृत होती है। तथा शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात उनके विषय वर्ग के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।

निष्कर्ष- डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन के निष्कर्ष कुछ इस प्रकार प्राप्त हुए हैं-

1. डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं के वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।अर्थात वैज्ञानिक अभिवृत्ति समान है।

2. डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण में सार्थक अंतर पाया गया है।अर्थात वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके निवास -स्थान के आधार पर समान नहीं है।

3. डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उनके विषय वर्ग के आधार पर कला एवं विज्ञान वर्ग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अर्थात वैज्ञानिक अभिवृत्ति उनके विषय वर्ग के आधार पर समान होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अस्थाना , विपिन(2014). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन .आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन

2.गुप्ता, एस0पी0(2020). अनुसंधान संदर्शिका: संप्रत्यय ,कार्य विधि एवं प्रविधि. प्रयागराज :शारदा पुस्तक भवन

3.विज्ञान प्रगति, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

4.मंगल ,एस0के0(2015) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली: पी0एच्0 लर्निंग

5.भटनागर, शिवानी एवं कक्कड़,डॉ सोनिक(2020) किशोर विद्यार्थियों में लिंगत आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेष्णात्मक अध्ययन

6. शर्मा, डॉ0 पी0सी0 एवं सिंह ,डॉ आभा(2002). शैक्षिक एवं मानसिक मापन, लखनऊ: आलोक प्रकाशन.

7.उदय कुमार सैम, "माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सामान्य विज्ञान का शिक्षण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, सामान्य विज्ञान में उपलब्धि के संबंध में"। एम फिल, शिक्षा। अन्नामलाई विश्वविद्यालय। शैक्षिक अनुसंधान के पांचवें सर्वेक्षण, खंड-II, नई दिल्ली: एनसीईआरटी, 2000, पृष्ठ 1910।

8.एनसीईआरटी (2005)। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

9. https://share.google/UOxfSNP8e61xKdNxj

10. https://share.google/UXnKmHHidakWqJWIU

11.https://rjhssonline.com/AbstractView.aspx?PID=2021-12-2-1

12.https://www.researchgate.net/publication/350626474_madhyamika_stara_ke_vidyarthiyom_ki_vaijnanika_abhivrtti_Scientific_Attitude_of_Secondary_Level_Students

Cite this Article:

पिंकी यादव[1], डॉ कमलेश यादव[2], "डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन " Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.520- 525, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

पिंकी यादव[1], डॉ कमलेश यादव[2]

For publication of research paper title

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026, (RPRI-3.89/ 6.89)

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.54